विद्या भवन बालिका लिद्यापीठ,लखीसराय

वर्ग नवम विषय संस्कृत शिक्षक श्यामउदय सिंह

पाठः द्वितीयः पाठनाम स्वर्णकाकः

ताः 19-04-2021 (एन.सी.ई.आर.टी.पर आधारित)

- नैतादृशः स्वर्णपक्षो रजतचञ्चुः स्वर्णकाकस्तया पूर्वं दृष्टः।
  तं तण्डुलान् खादन्तं हसन्तं च विलोक्य बालिका रोदितु –
  मारब्धा।तं निवारयन्ती सा प्रार्थयत्-तण्डुलान् मा भक्षय।
  मदीया माता अतीव निर्धना वर्तते ।स्वर्णपक्षः काकः प्रोवाच ,
  मा शुचः।
- शब्दार्थाः

  एतादृशः -ऐसा ,स्वर्णपक्षः- सोने के पंखों वाला ,रजतचञ्चुः-चाँदी की चोंच वाला

  पूर्वम् -पहले, खादन्तम् -खाते हुए को ,हसन्तम् -हँसते हुए को ,रोदितुम् -रोना ,

  आरब्धा- शुरु कर दिया , निवारयन्ती- हटाते हुए,प्रार्थयत्-प्रार्थना की,भक्षय-खाओ

  मदीया –मेरी, अतीव -बहुत अधिक ,प्रोवाच -बोला ,मा -मत , शुचः-शोक करो
- सरलार्थ
- उसके द्वारा ऐसा सोने की पंख वाला और चांदी की चोंच वाला सोने का कौआ पहले नहीं देखा गया था । उसको चावल खाते हुए और हंसते हुए देखकर लड़की ने रोना शुरू कर दिया ।उसको हटाते हुए उसने प्रार्थना की - चावलों को मत खाओ। मेरी मां बहुत गरीब है। सोने के पंखों वाला कौवा बोला ,शौक मत करो।